अध्याय – प्रथम

प्रस्तावना

1.0 प्रस्तावना

शिक्षण एक श्रम साध्य कार्य है । कुछ श्रम तो विभिन्न भूमिकाओ को सम्पन्न करने के कारण होता है - विशेषकर उन भूमिकाओ के साथ जो एक दूसरे से टकराती है । इसलिए शिक्षक जिन समस्याओ का सामना करता है उनमे मुख्य होती है - अपनी भूमिकाओं के सकलन की, उन्हे उसके लिए अत्यत महत्वपूर्ण जीवन मूल्यो के अनुरूप सगठित करने की, और उन्हे इस तरह सम्पन्न करने की, कि वे उसके आत्म - प्रत्यय या आत्म - आदर्शों से न हटाए । कार्य के समय या उसके बाद, जीवन के प्रति एक सकलित और तर्क सगत अनुकूल दृष्टिकोण वह है जिसका सामना सभी प्रौढ व्यक्ति करते है । जब हमे निरन्तर उन रीतियो से आचरण करने के लिए बाधित किया जाता है जो आपस मे प्रतिकूल होती है या जो हमारे आत्म आदर्शों और आत्म - प्रत्ययो के बीच अन्तर उत्पन्न कर देती है, उस समय हम अपने काम मे असतुष्ट, अप्रसन्न और प्रभावहीन हो सकते है । आशावादी, सतुष्टि और प्रसन्नता की अनुभूतिया न केवल अपने आप मे तथा अपने बारे मे सुखद होती है, बल्कि वे अच्छे मानसिक स्वास्थ्य का प्रतीक तथा उसकी बुनियाद भी होती है । इसलिये व्यावसायिक जीवन मे उन तत्वो तथा शक्तियों का होना आवश्यक है जो व्यक्तित्व की अखडता और शक्ति को विकसित करने मे सहायता देती है, साथ ही उन तत्वो का भी ज्ञान होना चाहिए जो सकलनात्मकता मे बाधा उत्पन्न करते है या हमारे मनोबल तथा कल्याण की भावना के लिए असकलनात्मक तथा घातक होते है ।

जिस तरह शिक्षकों द्वारा अनेक भूमिकाए, सम्पन्न की जाती है उसी तरह ऐसे अनेक तत्व भी है जो सकलनात्मकता मे बाधक या सहायक बन सकते है । निस्सन्देह ये तत्व शिक्षक के व्यक्तित्व और स्थितियो को प्रभावित करने मे

शिक्षक के व्यक्तित्व तथा उसकी कुशलता का महत्व सभी मे सर्वाधिक है । शिक्षक अपनी कुशलता से कक्षा मे जैसा शिक्षण का पर्यावरण बनाता है, मूलत उसी पर कक्षा की संवेगात्मक स्थिति तथा शिक्षार्थियो का व्यवहार, विकास एव निष्पत्ति का रूप निर्धारित होता है । कक्षा के भावनात्मक वातावरण पर शिक्षक के व्यक्तित्व की छाप होती है ।

शिक्षक के व्यक्तित्व की छाप के सबध मे कैटल (1970) ने अपने दृष्टिकोण के माध्यम से व्यक्तित्व को प्रयोगात्मक और वैज्ञानिक आधार प्रदान करने का प्रयास किया । उन्होने व्यक्तित्व को कुछ विशेष परिणाम देने की चेष्टा की ताकि किसी एक परिस्थिति मे व्यक्ति द्वारा किये जाने वाले व्यवहार को पहले से ही जाना जा सके । कैटल ने यह सब कुछ करने के लिए कारक - विश्लेषण तकनीक का प्रयोग किया ।

इसी तथ्य को आलपोर्ट (1937) ने व्यक्तित्व की अनेक परिभाषाओ का विश्लेषण करके यह निष्कर्ष दिया है कि व्यक्तित्व का स्वरूप परिवर्तनशील होता है । उन्होंने व्यक्तित्व के आन्तरिक पक्ष पर बल दिया है न कि उसके बाह्य पक्ष पर ।

व्यक्तित्व का शिक्षण पर बहुत अधिक प्रभाव पडता है । अच्छे शिक्षण के लिए शिक्षक का व्यक्तित्व प्रभावशाली होना चाहिए । यह माना जाता है कि व्यक्तित्व विशेषको का प्रभाव सफल शिक्षण पर पडता है । यह जाचने के लिए समय - समय पर विभिन्न शोध कार्य व्यक्तित्व विशेषको पर और शिक्षण की सफलता पर किये गये है ।

इसी बात को गेटजल एव जेक्सन (1963) ने अध्ययन मे बताया कि शिक्षको के व्यक्तित्व और उनके प्रभावशाली शिक्षण से सबंधित लगभग एक हजार से अधिक अध्ययन हुए है । इन अध्ययनो मे निम्नलिखित समस्याओ को सम्मिलित किया गया है ।

1) व्यक्तित्व शब्द के व्यापक अर्थ ।
2) व्यक्तित्व मापन मे विभिन्न कठिनाइयाँ ।
3) शिक्षकों के प्रभावशाली गुणो को स्थापित करने मे कठिनाइयाँ ।
4) प्रभावशाली मॉडल प्रतिमानों की सीमाए ।

शिक्षक व्यक्तित्व के बारे मे विद्वानो ने विभिन्न प्रकार के विचार दिए है गेटजल व जेक्सन ने व्यक्तित्व को निम्न प्रकार से समझाया -

1) उन्होंने मानव के सम्पूर्ण, व्यवहारों को व्यक्तित्व से सबंधित किया है ।
2) सामाजिक उत्प्रेरणा और व्यक्तित्व के साथ ताल-मेल जोडा है ।
3) वह व्यक्तित्व मे व्यक्ति के दृष्टिकोण, रूचि, आवश्यकताओं, मूल्य व व्यवस्थापना को शामिल करते है ।

सामान्य रूप से यह देखा गया है कि शिक्षक का स्वय का दृष्टिकोण उसके कक्षा के व्यवहारों को प्रभावित करता है ।

1.1 समस्या कथन -

"व्यक्तित्व विशेषकों एव सूक्ष्म शिक्षण कौशलो के सबध का अध्ययन"

प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व दूसरे व्यक्ति से भिन्न होता है । एक व्यक्ति मे जो व्यक्तित्व के विशेषक पाये जाते है, जरूरी नहीं कि दूसरे व्यक्ति मे भी वे विशेषक विद्यमान हो । हर व्यक्ति मे व्यक्तित्व के कुछ प्रबल पक्ष और कुछ निम्न पक्ष विद्यमान रहते है । व्यक्तित्व के इन विशेषकों का प्रभाव सूक्ष्म शिक्षण कौशलों पर पडता है या नहीं, यह जानने के लिए " व्यक्तित्व विशेषकों एव सूक्ष्म शिक्षण कौशलों मे सबध का अध्ययन " इस शोध कार्य मे किया गया है ।

1.2 उद्देश्य -

(1) क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय भोपाल के बी एस सी , बी एड चतुर्थ वर्ष की छात्राध्यापिकाओ की व्यक्तित्व विशेषकों का अध्ययन करना ।

(2) इन छात्राध्यापिकाओ के सूक्ष्म शिक्षण कौशलो के विकास का अध्ययन करना ।

(3) छात्राध्यापिकाओ के सूक्ष्म शिक्षण कौशलो एव व्यक्तित्व के विशेषकों मे सम्बध का अध्ययन करना ।

(4) छात्राध्यापिकाओ के व्यक्तित्व विशेषको एव उनके खोजपूर्ण प्रश्न कौशल के बीच सह-सबध स्थापित करना ।

(5) छात्राध्यापिकाओ के व्यक्तित्व विशेषको एव उसके व्याख्या कौशल के बीच सह-सबध स्थापित करना ।

(6) छात्राध्यापिकाओं के व्यक्तित्व विशेषको एव उनके दृष्टात कौशल के बीच सह-सबध स्थापित करना ।

(7) छात्राध्यापिकाओ के व्यक्तित्व विशेषको एव उनके उद्दीपन परिवर्तन कौशलों के बीच सह-सबध स्थापित करना ।

(8) शिक्षण कौशलो पर व्यक्तित्व के प्रभाव के आधार पर भावी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के चयन के प्रति सुझाव देना ।

1.3 शोध प्रश्न -

" क्या व्यक्तित्व विशेषको का प्रभाव सूक्ष्म शिक्षण कौशलों के विकास पर पडता है ।"

इस प्रश्न का उत्तर हम इस शोध कार्य के द्वारा प्राप्त करेगे ।

1.4 अध्ययन के चर -

हमारे अध्ययन मे निम्न चर है -

(1) व्यक्तित्व विशेषक (2) सूक्ष्म शिक्षण कौशल

1.5 चरों की प्रकार्यात्मक परिभाषाए -

(1) व्यक्तित्व विशेषक -

हमारे अध्ययन मे व्यक्तित्व विशेषको को कैटल के अनुसार 16 भागो मे बाटा गया है । (जिनका विस्तृत विवरण तृतीय अध्याय मे दिया गया है) ।

(2) सूक्ष्म शिक्षण कौशल -

इस अध्ययन मे निम्न सूक्ष्म शिक्षण कौशलो को लिया गया है -

(अ) खोजपूर्ण प्रश्न कौशल (ब) व्याख्या कौशल

(स) दृष्टात कौशल (द) उद्दीपन परिवर्तन कौशल

1.6. परिकल्पना -

शोध अध्ययन के उद्देश्यों को ध्यान मे रखते हुए शोध समस्या के लिए निम्नलिखित शून्य परिकल्पना निर्धारित की गई है । शून्य परिकल्पना का प्रयोग केवल सांख्यिकी की सार्थकता के परीक्षण के लिए किया जाता है । इस प्रकार की परिकल्पना को नकारात्मक रूप मे विकसित किया जाता है । चरों के सहसबध के लिए नकारात्मक कथन लिखा जाता है । इस प्रकार की परिकल्पना की विशेषता यह है कि इनके लिए कोई सैद्धांतिक आधार या औचित्य प्रस्तुत नहीं करना होता है । इस शोध अध्ययन के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाए निर्धारित की गई है -

(अ) व्यक्तित्व विशेषकों का सूक्ष्म शिक्षण कौशलो पर प्रभाव नहीं पडता ।

(ब) व्यक्तित्व विशेषकों का खोजपूर्ण प्रश्न कौशल विकास के साथ सह-सबध सार्थक नहीं है ।

(स) व्यक्तित्व विशेषको का व्याख्या कौशल विकास के साथ सह-सबध सार्थक नहीं है ।

(द) व्यक्तित्व विशेषकों का दृष्टात कौशल विकास के साथ सार्थक सह-सबध नहीं है ।

(इ) व्यक्तित्व विशेषकों का उद्दीपन परिवर्तन कौशल विकास के साथ सह-सबध सार्थक नही है ।

1.7 उपयोग में आने वाले शब्दों के अर्थ।

(क) व्यक्तित्व -

आधुनिक मनोवैज्ञानिको ने अनुकूलन के अर्थ। मे व्यक्तित्व की परिभाषा की है । व्यक्तित्व व्यक्ति का अपने सास्कृतिक परिवेश मे अनुकूलन दिखलाता है । इस अनुकूलन मे व्यक्ति जो व्यवहार करता है वही व्यक्तित्व है । अनुकूलन सिद्वात के अन्तर्गत व्यक्तित्व निर्माण मे जैविकीय कारको और परिवेश की अन्तरक्रिया को समुचित स्थान दिया गया है ।

व्यक्तित्व कोई स्थिर अवस्था न होकर एक गतिशील समष्टि है जो कि परिवेश के प्रभाव से बराबर बदलती रहती है । व्यक्तित्व व्यक्ति के आचार - विचार, व्यवहार, क्रियाए, गतिविधिया आदि का सक्षेप मे उसका समस्त व्यवहार है । व्यक्ति की वैयक्तिकता व्यक्ति के परिवेश से अनुकूलन करने के ढग मे अभिव्यक्त होती है । व्यक्ति का समस्त व्यवहार परिवेश से अनुकूलन करने की प्रक्रिया है ।

व्यक्तित्व के सबध मे वुडवर्थ। (1952) का कथन इस प्रकार है -

" व्यक्तित्व एक व्यक्ति के व्यवहार का सम्पूर्ण। गुण होता है, जिसका प्रदर्शन उसके विचार तथा अभिव्यक्त करने की आदत, उसकी अभिवृत्ति तथा रूचि, उसके कार्य करने के ढग तथा जीवन के प्रति उसके व्यक्तिगत दर्शन के द्वारा होता है ।"

व्यक्तित्व की परिभाषा -

गार्डन ऑलपोर्ट (1961) ने व्यक्तित्व की परिभाषा इस प्रकार दी है -

" व्यक्तित्व व्यक्ति के साथ उन मनो-दैहिक सस्थान का गत्यात्मक सगठन है जो उसके व्यवहारो एव विचारों को निर्धारित करता है ।"

मार्टन प्रिन्स (1929) -

" व्यक्तित्व, व्यक्ति के समस्त जन्मजात सस्थानों, आवेगों, प्रवृत्तियों, झुकावों एव मूल प्रवृत्तियों और अनुभव के द्वारा अर्जित सस्कार एव प्रवृत्तियों का योग है ।"

कैटल (1968) ने व्यक्तित्व को इस प्रकार परिभाषित किया है -

" व्यक्तित्व वह है, जिसके द्वारा हम यह भविष्यवाणी कर सकते है कि कोई व्यक्ति किसी परिस्थिति मे क्या करेगा ।"

कैटल (1905) का व्यक्तित्व विशेषकों का सिद्धात -

कैटल ने घटक विश्लेषण को अनेक प्रकार की समस्याओं को सुलझाने का साधन बताया है । उनका सिद्धांत अत्यधिक व्यापक क्षेत्र सम्मिलित करता है । उसमें व्यक्तित्व के घटक विश्लेषण द्वारा प्राप्त व्यापक सामग्री को संगठित किया गया है । गार्डन आलपोर्ट के समान कैटल के सिद्धात को भी विशेषक सिद्धांत कहा जा सकता है ।

व्यक्तित्व की प्रकृति के विवेचन में कैटल ने जो प्रत्यय इस्तेमाल किये उनमे से अनेक प्रयोगात्मक विधियों के परिणामों और व्यवहार के निरीक्षणात्मक अध्ययन पर आधारित है ।

कैटल के अनुसार -

" व्यक्तित्व वह है जो कि यह भविष्यवाणी करने की अनुमति देता है कि एक व्यक्ति, एक दी हुई परिस्थिति मे क्या करेगा । व्यक्तित्व मे व्यक्ति का समस्त व्यवहार सम्मिलित है चाहे वह आंतरिक हो या बाह्य ।"[1]

व्यक्तित्व विशेषक

वे बीज तत्व जिनसे व्यक्तित्व का निर्माण होता है, व्यक्तित्व विशेषक या शील गुण कहलाते है । इन्हीं शील गुणों के आधार पर एक व्यक्ति और दूसरे व्यक्ति मे अन्तर किया जा सकता है । ये गुण आंतरिक और बाह्य दोनों प्रकार के हो सकते है ।

कैटल के सिद्धात मे सबसे अधिक महत्वपूर्ण प्रत्यय विशेषक है । विशेषक एक मानसिक सरचना है, एक अनुमान है जो कि देखे हुए व्यवहार पर आधारित है और जिससे यह पता लगता है कि इस व्यवहार मे कुछ बातें नियमित और समीचीन रूप से कैसे होती है ।

(ख) व्यक्तित्व परीक्षण

इस शोध कार्य मे व्यक्तित्व परीक्षण के लिए 16 पर्सनाल्टी फैक्टर प्रश्नावली[1] का उपयोग किया गया है । (16 पी.एफ.कपूर 1970)

(ग) सूक्ष्म शिक्षण -

सूक्ष्म शिक्षण अध्यापकों को कक्षा अध्यापन प्रक्रियाओं की शिक्षा देने हेतु निर्मित नवीन प्रशिक्षण प्रणाली है । अध्यापकों के प्रशिक्षण मे यह प्रणाली कम समय मे अधिक उपयोगी सिद्व हुई है । सफल शिक्षण

आयोजित करने के लिये सूक्ष्म शिक्षण प्रक्रियाओं का ज्ञान अत्यंत आवश्यक है । एलन ने सूक्ष्म शिक्षण को इस प्रकार परिभाषित किया है - "सूक्ष्म शिक्षण किसी कक्षा मे आकार तथा समय में सूक्ष्मपदीय शिक्षण परिस्थिति है ।" (एलन ,1968)

सूक्ष्म अध्यापन मे वास्तविक अध्यापन (अभ्यास क्रिया) प्रशिक्षण सस्था मे ही आयोजित की जाती है । इसमे या तो स्थानीय स्कूल के छात्रो को बुलाया जाता है अथवा कुछ छात्राध्यापको से कक्षा के छात्रों की भूमिका निर्वाह कराई जाती है । छात्रो की आयु एव अभिक्षमता का ध्यान रखकर ही कक्षा का निर्माण किया जाता है । पाठ्यक्रम, विषय उपलब्ध साधन और कक्षा मे छात्र सख्या को आवश्यकतानुसार कम - ज्यादा किया जा सकता है । इस प्रकार अध्यापन प्रक्रिया नियत्रित होने से इच्छानुसार चर परिवर्तन किया जा सकता है ।

(घ) सूक्ष्म शिक्षण कौशल -

टर्नी एव अन्य के अनुसार - " जब से अध्यापन को एक सपूर्ण प्रक्रिया की बजाय विभिन्न अध्यापन कौशल्य का समूह समझा जाने लगा तब से ही कौशल आधारित अध्यापन का विस्तार प्रारम्भ हुआ । सूक्ष्म अध्यापन की नीव अध्यापन-प्रक्रिया को विभिन्न घटक कौशल पर आधारित मानने और एक-एक कौशल का अलग अलग अभ्यास करने की क्षमता पर आधारित है ।"

सूक्ष्म शिक्षण कौशल से तात्पर्य सुनिश्चित शिक्षक व्यवहार स्वरूपो से होता है जो छात्रों मे अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन के लिये प्रभावशाली होते है ।

सूक्ष्म शिक्षण कौशल की परिभाषा -

अध्यापक प्रभावशीलता एव अध्यापन के विश्लेषणात्मक विधि के प्रवर्तकों ने अध्यापन कौशल की परिभाषा इस प्रकार की है - "अध्यापन उन क्रियाओं पर आधारित है जो छात्र व्यवहार मे परिवर्तन लाने हेतु नियोजित एव क्रियान्वित किए जाए ।" (क्लार्क 1970)

कामीसार ने स्पष्ट किया है कि - "अध्यापन मे जो विभिन्न विशिष्ट क्रियाए सम्मिलित होती है वे है - प्रारम्भ, प्रदर्शन, उदाहरण, प्राक्कलन, आवेदन, अनुमान, सम्पुष्टि, व्याख्या, प्रश्न आदि ।" कामीसार (1966)

ब्राउन अध्यापन की बहुपक्षी क्रिया कि रूप की व्याख्या करते हुए निम्न कौशल को उसका अग बताते है - "प्रश्न, सूचना सुनना एव ऐसी ही अन्य क्रियाओं अर्थात अध्यापन अनेक शाब्दिक एव अशाब्दिक क्रियाओं पर आधारित है । जैसे - प्रश्न पूछना, छात्रों के उत्तर स्वीकार करना, प्रतिफलन, मुस्कान, सिर हिलाना, गति, हाव-भाव आदि ।

अध्यापन मे इन सभी क्रियाओ के उचित एव विशिष्ट समष्टिकरण से छात्र विकास के उद्देश्यों की प्राप्ति होती है । सम्बन्धित अध्यापन क्रिया अथवा व्यवहार विन्यास जिनका उद्देश्य छात्र अधिगम हो, अध्यापन कौशल कहलाएगे ।" ब्राउन (1975)

गेग कहते है - "तकनीकी कौशल वह विशिष्ट निर्देशन तकनीक व प्रक्रिया है जिसे अध्यापक अपनी कक्षा मे अध्यापन हेतु प्रयोग करता है । ये अध्यापन प्रक्रम का विभिन्न सबंधित घटक क्रियाओ मे विश्लेषण है जिनका अध्यापक अपने कार्य निष्पादन मे अबाध गति से उपयोग करता है ।" गेग (1968)

शिक्षको के एशियाई सस्थान (1972) ने अध्यापन के तकनीकी कौशल की परिभाषा इस प्रकार दी है - "विशिष्टतया अध्यापन की वे क्रियाए जो छात्रो मे इच्छित परिवर्तन लाने मे प्रभावशील होती है । ये एक दूसरे से सम्बद्ध होती है अर्थात अध्यापक द्वारा किसी भी एक व्यवहार घटक का प्रदर्शन करने से निश्चित लक्ष्य की पूर्ति संभव नहीं होती ।"

ब्रिटेन के स्टर्लिंग विश्वविद्यालय के मैकईनटेयर और व्हाईट ने अध्यापन के तकनीकी कौशल की व्याख्या करते हुये कहा है - "यह तकनीकी कौशल सम्बद्ध अध्यापन - व्यवहार का विन्यास है जो विशिष्ट अन्तरक्रिया स्थितियो मे कक्षा मे निश्चित शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति मे सहायक हो ।"[1]

अध्यापन प्रक्रिया के विभिन्न घटक कौशल का विवरण 1969 मे एलेन और रियॉन ने 14 घटक कौशल के रूप मे दिया । बोर्ग एव अन्य ने 1970 मे 18 कौशल खोज निकाले ।

फ्लैण्डर्स (1973) ने सम्प्रत्ययकृत कथन व श्रवण को ध्यान मे रखकर कक्षान्तर्गत अन्तरक्रिया के आधार पर अध्यापन कौशल का वर्गीकरण किया है ।

अध्यापन कौशल के इन सभी विवरणों एव वर्गीकरणों को ध्यान मे रखकर 22 कौशलों का निर्धारण किया गया है ।

ये 22 कौशल इस प्रकार है -

1	शैक्षिक उद्देश्य लेखन	2	विन्यास प्रेरण
3	प्रश्न सहजता	4	खोजपूर्ण प्रश्न
5	उच्च स्तरीय प्रश्न	6.	विभिसारी प्रश्न
7	मौन एव अशाब्दिक सकेत	8.	व्याख्या
9	दृष्टान्त कला	10	व्याख्यान

11	श्यामपट उपयोग	12	दृश्य-श्रव्य साधन का उपयोग
13	सम्प्रेषण पूर्णता	14	पाठ गति
15	प्रबलन	16	छात्र सहभागिता विस्तार
17	उद्दीपन परिवर्तन	18	छात्र व्यवहार अभिज्ञान
19	नियोजित पुनरावृत्ति	20	पाठ समापन
21	कार्य देयन	22	कक्षा प्रबध

हमने अध्यापन मे निम्न कौशलों को लिया है -

1	खोजपूर्ण प्रश्न	2	व्याख्या
3	दृष्टान्त कला	4	उद्दीपन परिवर्तन

1) **खोजपूर्ण प्रश्न कौशल** -

अनेक बार जब अध्यापक कक्षा मे प्रश्न पूछता है तो या तो छात्र उत्तर ही नहीं देते अथवा गलत उत्तर देते है । ऐसी स्थिति मे अध्यापक को छात्रो को सही उत्तर की ओर ले जाने हेतु बहुत से प्रश्नों का सहारा लेना पडता है जो एक के बाद एक ज्ञात पूर्व ज्ञान से नवीन ज्ञान तक ले जाने मे सहायक होते है । ये प्रश्न धीरे - धीरे ज्ञान की गहराई को छूते है अथवा खोजपूर्ण होते है । छात्रों के उत्तर सही होने पर भी अध्यापक छात्रो की बोध क्षमता की वृद्धि हेतु अथवा कारण - प्रभाव सम्बध स्थापित करने के लिए खोजपूर्ण प्रश्न पूछता है। ऐसी सभी तकनीक खोजपूर्ण प्रश्नो के अन्तर्गत आती है ।

इस कौशल की विशेषता है कि छात्रो के उत्तरो का आधार लेकर अनेक खोजपूर्ण प्रश्न पूछे जाते है ताकि छात्रो को सही उत्तर और उसके सही होने का कारण भली प्रकार समझ मे आ जाए ।

इस कौशल के निम्न घटक है -

1 अनुबोधन क्रिया

2 अधिक सूचना प्राप्ति प्रविधि

3 पुनर्केन्द्रण तकनीक

4 पुननिर्देशन प्रविधि

5 समीक्षात्मक अभिज्ञता वृद्वि प्रविधि

1 अनुबोधन क्रिया -

छात्र जब उत्तर देने मे हिचकिचाता है अथवा आधा उत्तर देकर रूक जाता है तो अध्यापक उसकी सहायता हेतु सही उत्तर देने के लिए मुख्य सकेत देता है थोडा उत्तर स्वय देते हुए आगे बताने हेतु प्रोत्साहिक करता है । यदि छात्र फिर भी उत्तर न दे पाए तो वह सरल प्रश्न पूछकर उसे आगे बढाने का प्रयत्न करता है । अनुबोधन का उपयोग तभी किया जाता है जब छात्र कहे कि मुझे नहीं पता या उत्तर देते हुए हिचकिचाए । जब उसका उत्तर पूर्णतया सही न हो या कमजोर हो, तब भी इसी प्रक्रिया के सहारे उसे सही उत्तर की ओर प्रेरित किया जा सकता है ।

2 अधिक सूचना प्राप्ति -

यदि छात्र का पूर्व उत्तर अधूरा है अथवा आंशिक रूप से गलत है तब अध्यापक स्पष्टीकरण, व्याख्या और विस्तारपूर्वक विचार करने की प्रक्रिया का सहारा लेकर उसका उत्तर पूर्ण कराता है । अध्यापक को अधिक सूचना निकलवानी पडती है और अधिक स्पष्टीकरण हेतु उसे कुरेदना पडता है । इस प्रकार छात्र को सही उत्तर तक लाने के लिए अध्यापक को अधिक सूचना प्राप्ति के प्रयत्न करने पडते है ।

3. पुनर्केन्द्रण तकनीक -

जब छात्र सही उत्तर देता है तब इस तकनीक का सहारा लेकर अध्यापक पूर्व घटित अथवा पढी हुई स्थिति का उदाहरण लेकर छात्र का ध्यान उस पर पुन केन्द्रित कर जानना चाहता है कि छात्र पूर्ण समझदारी से उत्तर दे रहा है या कि रटा - रटाया है अथवा सयोगवश उत्तर सही है । इस विधि द्वारा छात्र को अन्य समान परिस्थितियो मे अपने उत्तर की जाच करनी होती है । इस प्रकार छात्र अपने उत्तर को विभिन्न परिस्थितियो के परिप्रेक्ष्य मे समझता है ।

4 पुननिर्देशन प्रविधि -

एक ही प्रश्न विभिन्न छात्रो से पूछा जाता है ताकि अधिक से अधिक छात्रों की सहभागिता प्राप्त की जा सके । एक ही प्रश्न विभिन्न छात्रो से पूछा जाता है अथवा उसी प्रश्न के छोटे-छोटे प्रश्न बनाकर विभिन्न छात्रो से पूछा जाता है फिर मुख्य प्रश्न पर आया जाता है । यदि उद्‌बोधन के उपरात भी कोई छात्र प्रश्न का उत्तर न दे सके तो वह प्रश्न अन्य छात्र या छात्रों से पूछा जाना भी पुननिर्देशन कहलाता है।

5 समीक्षात्मक अभिज्ञता वृद्वि -

छात्रो द्वारा दिए गये सही उत्तरो पर जब 'क्यो' और 'कैसे' जैसे प्रश्न पूछे जाते है तो अध्यापक अपेक्षा करता है कि इससे छात्रो की समीक्षात्मक अभिज्ञता की वृद्वि होगी । छात्रों को अपने सही उत्तरों के पीछे जो तर्क है उसे समझने मे सहायता मिलेगी ।

2) व्याख्या कौशल -

अध्यापन मे सभी कक्षाओं मे चाहे वे निम्न हो अथवा ऊची, अध्यापको को विभिन्न विचारो घटनाओ एव सप्रत्तयों की व्याख्या करनी पडती है । यह अध्यापन कला का एक प्रमुख कौशल है । सभी अध्यापक सदैव इसका उपयोग करते है ।

'व्याख्या ऐसी क्रिया है जिसके द्वारा किसी व्यक्ति मे एक सप्रत्यय, सिद्वात, घटना अथवा विचार के विषय मे जो ज्ञान की कमी है उसे पूरा किया जाए । यह उसके पूर्व ज्ञान से सम्बद्ध कर किया जा सकता है । व्याख्या का आधार छात्र का पूर्व ज्ञान, घटना या सिद्वात का स्वरूप और इन दोनो के आपसी सबधो पर निर्भर करता है ।

इस कौशल मे ऐसी कुछ क्रियाए है जिन्हे करने से व्याख्या स्पष्ट एव प्रभावशील होती है । ये निम्न है -

1) व्याख्या कडियों का प्रयोग

2) प्रारम्भिक एव समाप्ति कथन

3) छात्र बोध की जाच

(1) व्याख्या कडियों का प्रयोग -

व्याख्या मे सबध जोडने वाले शब्दो अथवा वाक्याशों का प्रयोग मन्तव्य को स्पष्ट करने के लिए किया जाता है । ये ऐसे समुच्चय बोधक अथवा सम्बध सूचक होते है जो स्पष्टतया किसी घटना, सप्रत्यय, क्रिया व आदि को कारण परिणाम, तर्क, क्रम, काल, उद्देश्य आदि के सम्बध बताते है । इनमे से कुछ ये है -

कारण है कि	यह परिणाम है	इसकी क्रिया है
इसलिये	इसलिये कि	का प्रयोजन है
इसके परिणामस्वरूप	इसके कारण	इसके उपरात
इसीलिये	क्या यदि	इससे पूर्व
यह है कि जैसे	इस प्रकार	क्यो
		इत्यादि

(2) प्रारम्भिक एव समाप्ति कथन -

व्याख्या प्रारम्भ करने से पूर्व छात्रो के मस्तिष्क को आकर्षित करने हेतु प्रारम्भिक कथन कहे जाते है । इसी प्रकार अन्त मे भी कुछ समाप्ति स्वरूप कहा जाता है ताकि व्याख्या का अन्त भी भला है । इन कथनो का व्याख्या से भले ही सीधा सम्बन्ध न हो परन्तु उनका अच्छा प्रभाव होता है जिससे व्याख्या को समझने मे सहयोग मिलता है

प्रारम्भिक कथन मानसिक रूप से छात्रो को व्याख्या के लिए तैयार करते है । समाप्ति कथन का साराश प्रस्तुत करते हुए मुख्य बातो का वर्णन करते है जिससे उन्हे याद करना आसान हो जाता है ।

(3) छात्रों के बोध की जाच -

छात्र व्याख्यायित विषय को भली प्रकार समझ पाये है या नहीं, यह जानने के लिए अध्यापक प्रश्न पूछता है । यदि अधिकाश छात्र उसके प्रश्नो के सही उत्तर दे देते है तो समझा जा सकता है कि छात्र बोध उचित है, अन्यथा पुन व्याख्या करनी होगी और उसे अधिक प्रभावशाली बनाना होगा । व्याख्या बोधगम्य हो, यही इस घटक का उद्देश्य है ।

(3) दृष्टात कौशल -

बालकों को अमूर्त विचारो अथवा सप्रत्यय के विषय मे उदाहरणो एव दृष्टातो की सहायता से समझाया जा सकता है । उदाहरण या दृष्टात ऐसी स्थितियो का विवरण होता है जिनमे विशिष्ट सप्रत्यय, विचार या सिद्धात का उपयुक्त प्रयोग किया गया हो । इस कौशल मे विचार या सप्रत्यय का विवरण एव व्याख्या होती है जिसमे उदाहरण व दृष्टात का यथास्थान उपयोग किया जाता है ।

दृष्टातों या उदाहरणो मे प्रस्तुतीकरण हेतु निम्न माध्यमो का उपयोग किया जाता है -

अशाब्दिक -

(क) वास्तविक वस्तुओ को उदाहरण स्वरूप दिखाया जा सकता है, जैसे फूल, पत्ते, पप, थर्मामीटर आदि दिखाकर अपनी बात समझाई जाए ।

(ख) मॉडल - ऐसे आदर्श या माडल तैयार किये जाते है जिनके सहारे किसी विचार, सप्रत्यय और सिद्वात की दृष्टात द्वारा व्याख्या की जाती है । ये मॉडल वास्तविकता की प्रतिकृति होते है ।

(ग) चित्र - जब वास्तविक वस्तु उपलब्ध न हो तब उसके चित्रो द्वारा उसके विषय मे व्याख्या की जा सकती है । चित्र कक्षा मे आसानी से लाया व दिखाया जा सकता है ।

(घ) मानचित्र व रेखाचित्र - इतिहास, भूगोल एव विज्ञान पढाने मे रेखाचित्र एव मानचित्र बहुत उपयोगी होते है । इनकी सहायता से पाठ के मुख्य बिन्दुओ की व्याख्या की जा सकती है ।

(ड) प्रायोगिक प्रदर्शन - विज्ञान, प्रकृति - अध्ययन और भूगोल मे प्रयोग प्रदर्शन से विषय को स्पष्ट एव प्रभावशील रूप से समझाने मे बहुत सहयोग मिलता है और इससे नियम या सिद्वात को वास्तविक प्रक्रिया द्वारा स्पष्ट किया जाता है ।

शाब्दिक माध्यम -

इसमे मौखिक रूप से दृष्टात देकर व्याख्या की जाती है । मौखिक उदाहरणो मे अध्यापक, कहानी, घटना या चुटकले कहकर अपनी बात को छात्रो को समझाता है । दृष्टात कौशल मे शाब्दिक एव अशाब्दिक दोनो प्रकार के उदाहरणो व दृष्टातो का उपयोग होता है ।

(4) उद्दीपन परिवर्तन कौशल

अध्यापन की सफलता का एक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि अध्यापक छात्रो के ध्यान को आकर्षित कर पाठ्यवस्तु पर केन्द्रित कराये रखे । इस प्रयोजन हेतु वह कभी अपनी जगह से चलकर श्यामपट के समीप आता है, कभी छात्रो के बीच जाकर उनसे प्रश्न पूछता है, कभी हाथ के इशारे करता है । कभी चेहरे पर हाव-भाव लाकर अपनी बात कहता है । कभी कभी वह छात्रों को ध्यान देने या इधर देखने को कहकर कुछ समझाता है । कभी वह प्रश्न पूछता है, कभी छात्रो के प्रश्नो का उत्तर देता है । कभी वह चित्र या वस्तु दिखाता है । फिर उसका विवरण देता है । इस प्रकार इन विभिन्न उद्दीपन क्रियाओ द्वारा छात्रो के अवधान को आकर्षित कर उसे केन्द्रित किया जाता है और पाठ प्रभावशील बनाया जाता है इस कौशल को उद्दीपन परिवर्तन की सज्ञा दी गई है क्योंकि उद्दीपन का परिवर्तन ही इसमे प्रमुख है ।

उद्दीपन परिवर्तन कौशल के घटक है -

1- सचलन 2- हाव-भाव

3- वाक परिवर्तन 4- केन्द्रण

5- अन्तर क्रिया-शैली परिवर्तन

6- विराम 7- मौखिक - दृश्य बदलाव

1 सचलन - छात्र यदि किसी उद्दीपन को एक ही स्थिति मे अधिक देर तक देखते रहे तो उनका ध्यान उससे हट जाता है। अध्यापक के साथ भी यही होता है । यदि वह पढाते समय अधिक देर तक एक ही स्थिति मे, एक ही जगह, एक ही स्थान मे खडा रहे तो थोडी देर बाद छात्र उसकी और ध्यान न देकर इधर - उधर देखने लगते है । यदि अध्यापक हिलता डुलता है, कक्षा मे आवश्यकतानुसार अपनी जगह बदलता है, हाथ पैर हिलाता है तो छात्रो का ध्यान उसकी ओर लगा रहता है । अभ्यास एव अनुभव से अध्यापक सचलन क्रिया मे कुशल हो सकता है ।

2 हाव-भाव - पाठ पढाते हुए अध्यापक को पाठ्यवस्तु के अनुसार हाव-भाव करने चाहिये । भाषा शिक्षण में हर्ष-विवाद के प्रसग के अनुरूप अध्यापक के चेहरे पर हाव-भाव आने चाहिए । केवल मौखिक विवरण उतना प्रभावशाली नहीं होता जितना कि वैसे ही हाव-भाव होते है । ये हाव-भाव चेहरे की भावभंगिमा भी हो सकती है और हाथ पैरों के इशारे भी । इन हाव-भावों से छात्रो के ध्यान को पाठ्यवस्तु की और निर्देशित किया जा सकता है ।

3 वाक् - सरूप परिवर्तन - हाव-भावो को शारीरिक रूप से प्रदर्शित किए बिना केवल आवाज के ऊचे-नीचे करने या उसी मे परिवर्तन करके अनेक भावो को छात्रो को समझाया जा

सकता है । विभिन्न शब्दों पर जोर देने से उनका अर्थ, गहराई लिए हुए हो जाता है । अध्यापक की आवाज मे परिवर्तन कई तरह के हो सकते है । ऊची आवाज, जोर की, तेज, तीव्र गति किसी शब्द पर दबाव डालकर बोलना आदि विभिन्न स्थितियों एव भावों को स्पष्ट करते है ।

4 केन्द्रण - इस घटक कौशल का प्रयोग उस स्थिति मे किया जाता है जब छात्रो के अवधान को पाठ के किसी विशिष्ट बिन्दु पर केन्द्रित करना हो ताकि छात्र उनकी व्याख्या ठीक तरह समझ जाए । इस बिन्दु पर ध्यान केन्द्रित किए बिना यदि आगे बढाया जायेगा तो पाठ को समझना छात्रो के लिये कठिन हो जायेगा । इस कौशल मे मौखिक कथन, हाव-भाव, सचलन का प्रयोग किया जाता है ।

5 अन्तर - क्रिया शैली परिवर्तन - जब दो या अधिक व्यक्ति एक दूसरे से मौखिक वार्तालाप करते है तो इसे मौखिक अन्तर क्रिया की सज्ञा दी जाती है । कक्षा मे कई प्रकार की अन्तर क्रियाए होती है -

1	अध्यापक	-	कक्षा
2	अध्यापक	-	छात्र
3	छात्र	-	छात्र
4	छात्र	-	अध्यापक
5	छात्र	-	कक्षा

छात्र सहभागिता को अन्तर क्रिया परिवर्तन से प्रोत्साहन मिलता है और अध्यापक कक्षा मे ऐसा वातावरण उत्पन्न करता है कि पाठ मे सभी का सहयोग प्राप्त हो । अध्यापक इसके प्रयोग द्वारा अपने शिक्षण को प्रभावशाली बना सकता है ।

6 विराम - विराम से तात्पर्य ऐसे मौन से है जो अध्यापक बोलते-बोलते रूक जाये ताकि छात्रो का ध्यान उसकी और आकर्षित हो । अध्यापक यदि स्वय ही बोलता रहे और छात्रो को कुछ कहने का अवसर न दे तो पाठ नीरस हो जता है और छात्र पाठ मे रूचि लेना कम कर देते है । इसीलिये मौन विराम का प्रयोग ध्यान आकर्षण हेतु किया जाता है ।

7. मौखिक - दृश्य बदलाव - पाठ पढाते हुये मौखिक विवरण के साथ-साथ कभी अध्यापक प्रयोग दिखाता है, कभी चित्र दिखाकर या श्यामपट पर रेखाचित्र बनाकर या लिखकर समझाता है कभी वह बोलते-बोलते मॉडल दिखाने लग जाता है, कभी चित्र दिखाते - दिखाते विवरण देने लगता है । कभी-कभी वह बोलता भी है कभी चित्र का प्रयोग भी दिखाता है । इन सभी क्रियाओं को मौखिक - दृश्य बदलाव का नाम दिया गया है ।

यह सातो घटक कौशल छात्रो के अवधान को अध्यापक एवं उसके अध्यापन की और आकर्षित कर उनकी अभिरूचि बनाए रखने मे सहायक सिद्व होते है ।

1.8 अध्ययन की परिसीमाएं -

(अ) इस अध्ययन के अन्तर्गत न्यादर्श का चयन क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय भोपाल से ही किया गया है, क्योंकि शोधार्थी इसी महाविद्यालय की छात्राध्यापिका है ।

(ब) इस अध्ययन मे न्यादर्श का चयन क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय भोपाल की बी एस सी., बी एड. चतुर्थ वर्ष की कक्षा से ही किया गया है ।

(स) इस अध्ययन मे केवल छात्राध्यापिकाओ को ही सम्मिलित किया गया है, इसमे छात्राध्यापक सम्मिलित नहीं है ।

(द) इस अध्ययन मे सूक्ष्म शिक्षण के चार कौशलो को ही लिया गया है, खोजपूर्ण प्रश्न कौशल (Probing Questions), व्याख्या कौशल (Explaining) दृष्टान्त कौशल (Illustration) उद्दीपन परिवर्तन कौशल Stimulus Variation).

1.9 शोध का महत्व -

शिक्षा के स्तर को ऊचा उठाने के लिए उत्तम, योग्य एव प्रशिक्षित शिक्षको की आवश्यकता होती है । इसके लिये यह जरूरी है कि वे शिक्षण कौशलो के प्रयोग मे पारगत हो ।

प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व दूसरे व्यक्ति से भिन्न होता है । किसी के व्यक्तित्व मे कुछ विशेषताए पाई जाती है तो किसी के व्यक्तित्व मे कुछ और। व्यक्ति की कार्यशैली पर उसके व्यक्तित्व का प्रभाव दिखलाई पडता है । छात्रो के सूक्ष्म शिक्षण कौशलों के विकास पर भी व्यक्तित्व का प्रभाव पडता है कि नहीं यह जानना बहुत महत्वपूर्ण है । अत. इस शोध काय मे "व्यक्तित्व विशेषको एव सूक्ष्म शिक्षण कौशलो के सबध का अध्ययन" किया गया है ।

इसके आधार पर यह निश्चय किया जा सकता है कि विभिन्न शिक्षण कौशलो के पर्याप्त विकास के लिये अध्यापक मे क्या विशेषताए होनी चाहिये । किसी अध्यापक मे अमुक शिक्षण कौशल का अभाव उसके व्यक्तित्व विशेषको के कारण हो सकता है । प्रस्तुतशोध से स्पष्ट हो जाता है कि शिक्षक प्रशिक्षणार्थियो के चयन में उसे किन विशेषताओं को ध्यान मे रखना चाहिये । क्या शिक्षण एवं छात्रो में पर्याप्त अधिकार के लिये अध्यापक को व्यक्तित्व विशेषताओ का क्या योगदान है यह भी प्रस्तुतशोध से स्पष्ट हो जाता है ।

यदि कोई प्रशिक्षाणार्थी किसी शिक्षण कौशल को न ही ग्रहण कर पाता तो इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि उस प्रशिक्षणार्थियो मे वे व्यक्तित्व विशेषक न हो जो उस कौशल मे सहयोग करते है । अत. इन व्यक्तित्व विशेषको का पता लगाना एव उनका सम्बध शिक्षण कौशलों से स्थापित करना शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में एक नई दिशा है जो भावी शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों मे पर्याप्त सुधार एव परिवर्तन के लिये अपेक्षित है ।

सूक्ष्म शिक्षण पर शोध कार्य, अधिकतर प्रशिक्षण एव वातावरण जनीन कारकों का ही अध्ययन करते आये है किन्तु व्यक्ति मे अन्तर्निहित कारकों एव कौशल विकास के सम्बध की दिशा मे शोध कार्यों का अभाव रहा है । प्रस्तुत शोध कार्य इसी दिशा मे एक प्रयास है ।